महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-२१

जुलाई से सितम्बर २०२४

विक्रमी संवत् २०८०-८१

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री नायब सिंह सैनी
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्रीमती सीमा त्रिखा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

डॉ. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

डॉ. सत्येन्द्र कुमार गौतम

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

mvsu.ac.in

प्रतिवर्षं अगस्तमासस्य १५ दिनाङ्के स्वधीनतादिवसः आयोज्यते । अयं दिवसः अस्माकं राष्ट्रस्य गौरवपूर्णे इतिहासे महत्त्वपूर्णः वर्तते। अस्य दिनस्य स्मरणं न केवलं अस्मान् स्वातन्त्र्यस्य मङ्गलप्राप्तेः स्मृतिं यच्छति अपितु महापुरुषाणाम् असङ्ख्यकान् संघर्षान् त्यागान् साहसिककार्यान् प्रति च पुनः पुनः प्रबोधयति येन भारतं स्वतन्त्रराष्ट्रं जातम्। सन् १९४७ तमे वर्षे ब्रितानीयशासनात् मुक्तिं प्राप्य अस्माकं राष्ट्रः एकं नवीनं अध्यायं प्रति प्रविष्टः। एषः दिवसः केवलं उत्सवः नास्ति अपितु आत्मचिन्तनस्य, राष्ट्रचेतनायाः, कर्तव्यबोधस्य च अवसर अप्यस्ति।

अस्य पर्वस्य मूलतत्त्वं अस्ति – स्वतन्त्रता । किन्तु स्वतन्त्रता केवलं राजनीतिकाधिकार एव नास्ति अपितु अस्य व्यापकः अर्थः वर्तते । समाजिकस्वतन्त्रता, आर्थिकस्वावलम्बनं, सांस्कृतिकप्रबोधश्च अस्याः स्वतंत्रतायाः अन्तर्गतानि समागच्छन्ति। वस्तुतः स्वतन्त्रता तदा एव सार्थका भवति यदा राष्ट्रस्य प्रत्येकः नागरिकः स्वस्वकर्तव्ये पूर्णं योगदानं ददाति, समाजस्य उत्थाने निष्ठया समर्पणं च करोति । स्मरणीयं यत् स्वतन्त्रतायाः फलम् अस्मभ्यं कामोपभोगाय एव न भवेत्, अपितु अस्याभ्यन्तरे राष्ट्रस्य अभ्युदयाय सह कर्तव्यबोधः अपि अवश्यं विनिवेश्यते। स्वतन्त्रतादिवसः अस्मान् पुनः स्मारयति यत् अस्माभिः स्वातन्त्र्यं केन प्रकारेण प्राप्तं । महात्मा गान्धी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोसः, भगतसिंहः, रानी लक्ष्मीबाय्यः इत्यादयः महावीराः स्वतन्त्रतायाः पथं रचयित्वा जीवनं त्यक्तवन्तः। तेषां त्यागकथाः, अमृतसाहसश्च अस्मान् प्रतिवर्षं प्रेरयन्ति यद् अस्माकम् अपि राष्ट्रं प्रति निष्ठाभक्तिः योगदानं च भवेत्।

अद्यापि स्वतन्त्रतायाः सप्तसप्ततिवर्षेभ्यः परं स्वातन्त्र्येण सह अस्माभिः नैकाः सोपानाः संप्राप्ताः। वैज्ञानिकानुसन्धानः, क्रीडासु विजयः, सांस्कृतिकं प्रबोधनं च एतेषु विषयेषु अस्माकं राष्ट्रेण विश्वपटले मुख्यरूपेण प्रसिद्धिः प्राप्ता तथापि दरिद्रता, भ्रष्टाचारः, सामाजिकविषमता, शिक्षाया अभावः च अद्यापि समाजे दृश्यते । इदानीं स्वतंत्रतादिवसः अस्माकं कर्तव्यस्य दिग्दर्शनं करोति यत् एतान् समस्याः परिहर्तुं सर्वेषाम् सजगं साहसं कर्तव्यमस्ति।

युवानामपि स्वतंत्रतादिवसस्य अवबोधनं आवश्यकम् अस्ति यदस्य दिनस्य सार्थकत्वं भविष्यति । अस्मान् अधुना अवगन्तव्यं यत् स्वातन्त्र्यं केवलं भौतिकसुखस्य प्राप्तये नास्ति अपितु समाजस्य उन्नतये वर्तते, अयं श्रेष्ठयोगदानस्य साधनं भवेत् । अस्माकं कर्तव्यं यत् तान् प्रेरणया शिक्षया च सम्मिलय, स्वराज्यस्य एकतायै प्रतिष्ठायाः निर्माणाय समर्थान् कुर्मः। स्वतन्त्रता दिवसः अस्मान् प्रेरयति यत् अस्माभिः प्रत्येकजनः स्वकर्मणा समाजे राष्ट्रे च योगदानं दद्यात् । राष्ट्रप्रेमस्य साक्षात्कारः अस्य श्रेष्ठमाध्यमं भवेत् येन जनाः निष्ठया कर्मणि प्रवर्तन्ते, समाजस्य उत्कर्षाय उत्सर्गं न कुर्वन्ति।

अतः एषः दिवसः केवलं भारतस्य अतीतस्य गौरवस्य चिन्तनं नास्ति अपितु एकस्य उत्तिष्ठितस्य प्रणिधेयस्य भारतस्य दिशायाम् अस्माकं मार्गदर्शनं अपि अनेन माध्यमेन भवति। अद्यतनं अस्माकं सङ्कल्पः भवेत् - वयं केवलं स्वातन्त्र्यस्य उपभोगं न स्वीकुर्मः, अपितु अस्य स्वतन्त्रतायाः अधिकं सार्थकं राष्ट्रं निर्माणं कर्तुं प्रयासं कुर्मः। सम्पूर्णं भारतं सह मिलित्वा अस्माकं भारतं वैश्विकस्तरे सम्मानं प्रतिष्ठां च प्रापयितुं प्रतिज्ञां कुर्मः। जयतु भारतम् !

सम्पादकः

दिनांक- 15-17 जुलाई 2024 को 'मन्दिर एवं तीर्थ प्रबन्धन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल द्वारा "मन्दिर एवं तीर्थ प्रबन्धन" विषय पर दिनांक 15 जुलाई से 17 जुलाई 2024 को तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल नौ सत्र सम्पन्न हुए। कार्यशाला में कुल 40 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा देशभर से कुल 11 विषय विशेषज्ञ विद्वानों ने कार्यशाला को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्यशाला के उद्देश्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर की सुरक्षा और संरक्षण हेतु नए उपाय और कार्यक्रमों का विकास करना, मंदिर और तीर्थ स्थलों के प्रबंधन के लिए नवाचार, अनुसंधान और विकास के कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना उनकी सुरक्षा, संगठन और सेवाओं की समुचित प्रबंधन प्रणाली विकसित करना, पर्यटन और यात्रा के लिए आकर्षक बनाने के लिए विकास कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना, मन्दिरों एवं तीर्थों द्वारा चल रहे शिक्षा एवं समाज सेवा के कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर तकनीकी व प्रशासनिक योग्यता का विकास करना एवं प्रबन्धन, संचालन एवं विकास को दृष्टि में रखते हुए स्वरोजगार-सम्पन्न मानव संसाधन को प्रशिक्षित करना।

कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 15 जुलाई 2024 को विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री मदन मोहन मोहन छावड़ा (अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के 48 कोस कुरुक्षेत्र मॉनीटरिंग कमेटी) मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि श्री अरुण रामकृष्ण नेटके (अर्चक पुरोहित संपर्क प्रमुख, विश्व हिन्दू परिषद् के अखिल भारतीय मन्दिर) एवं प्रो. मंजुला चौधरी (निदेशक, दूरस्थ शिक्षा केन्द्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला में श्री पृथ्वी राज (सचिव, माता मनसा देवी मन्दिर समिति), श्री राजेन्द्र राणा (मॉनीटरिंग रिसर्च एवं डाक्यूमेंटेशन विभाग), प्रो. भाग सिंह बोदला (निदेशक, IQAC) तथा डॉ. अभिषेक गोयल (सहायक आचार्य, मीडिया एवं जनसंचार विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय), श्री रविन्द्र कुमार रायजादा (वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय), प्रो. अशोक थपलियाल (वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय), शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. सत्य प्रकाश दूबे ने प्रशिक्षण प्रदान किया। नौवें और समापन सत्र के अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज (कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय) रहे तथा मुख्य अतिथि प्रो. बृज किशोर कुठियाला (पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा उच्च शिक्षा परिषद्) ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। सत्र में अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो. सत्य प्रकाश दूबे का सान्निध्य भी प्राप्त रहा और सत्र का संचालन डॉ. नवीन शर्मा ने किया।

विश्वविद्यालय द्वारा श्री कालेश्वर महादेव मन्दिर (यमुना तट) पर आयोजिक कार्यक्रम

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ द्वारा महर्षि व्यास जन्मोत्सव (गुरु पूर्णिमा) के शुभ अवसर पर **दिनांक 21 जुलाई, 2024** को महर्षि व्यास की कर्म एवं तपःस्थली यमुनानगर जनपद में श्री कालेश्वर महादेव मन्दिर (यमुना तट) में एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज एवं संयोजक डॉ. हरीश कुमार रहे। कार्यक्रम में एडवोकेट श्री मुकेश गर्ग (सदस्य, हरियाणा इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेटरी कमीशन) मुख्य अतिथि, प्रो. जे. पी. सेमवाल (पूर्व निदेशक, वी.वी.आर.आई., होशियारपुर, पंजाब) मुख्य वक्ता एवं डॉ. नक्षपाल सिंह (स्टार एक्स विश्वविद्यालय, गुरुग्राम) विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

श्री कालेश्वर महादेव मन्दिर के अध्यक्ष स्वामी शांतानंद सरस्वती ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर श्री राजबीर सिंह (प्रधानाचार्य, इंटर कॉलेज रामपुर), डॉ. हरीश शर्मा, श्री प्रदीप कलेसर, श्री बलबीर चौधरी, श्री पवन बटार, श्री रमेश आर्य, श्री महिपाल रोहिल्ला, श्री जोगिन्दर सिंह एवं श्री रामशरण जी उपस्थित रहे।

'संस्कृत की आधारभूत संरचना' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल द्वारा स्थापित **भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र** की ओर से भारतीय ज्ञान-परम्परा के मूल स्रोत संस्कृत में कौशल संवर्धन हेतु **'संस्कृत की आधारभूत संरचना'** विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन **23 से 30 जुलाई, 2024** तक विश्वविद्यालय के टीक परिसर में किया गया। यह कार्यक्रम संस्कृत से भली-भाँति परिचित कराने, संस्कृत को रुचि पूर्ण तरीके से पढ़ने,संस्कृत की सरलता का बोध कराने व संस्कृत संवाद कौशल संवर्धन हेतु इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। समापन के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण से विद्यार्थियों को न केवल संस्कृत अध्ययन में रुचि होगी अपितु संस्कृत की सरसता व सरलता का बोध भी हुआ है, जिससे विद्यार्थी भारतीय ज्ञान को आत्मसात करके जीवन को सफल कर सकेंगे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से संचालित की जा रही है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यप्रकाश दुबे (शैक्षणिक अधिष्ठाता), कार्यक्रम प्रशिक्षक डॉ. नवीन शर्मा (संयोजक, भारतीय ज्ञान-विज्ञान शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र) तथा डॉ. रामानन्द मिश्र, डॉ. शर्मिला, डॉ. चन्द्रकान्त और डॉ. शीतांशु त्रिपाठी ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा मनाया गया 'एंटी रैगिंग सप्ताह'

दिनांक 12 से 18 अगस्त तक महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा **'एंटी रैगिंग सप्ताह'** का आयोजन किया गया। भारत सरकार के **'सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय'** की ओर से चलाए जा रहे **'नशा मुक्ति अभियान'** के तहत सभी आचार्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई गई। जिसका उद्देश्य देश की युवा शक्ति और समाज को नशे से दूर करने के लिए हरसम्भव प्रयास करना है। इसके अन्तर्गत जागरूकता के उद्देश्य से पूरे सप्ताह विश्वविद्यालय परिसर में कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं निश्चित की गई।

14-15 अगस्त 2024 को संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 'हर घर तिरंगा यात्रा' एवं 'स्वतन्त्रता दिवस' कार्यक्रम का आयोजन

(बाँए) दिनांक 14-08-2024 को गांव टीक में स्थित गूगामेढ़ी से पंचायत घर तक **'हर घर तिरंगा यात्रा'** के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अधिकारी, प्राध्यापक, कर्मचारी एवं ग्रामीण। (दाँए) 15 अगस्त 2024 को **78 वां स्वाधीनता दिवस** के अवसर पर राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते विश्वविद्यालय परिवार के साथ माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज।

'भारतीय ज्ञान परम्परा में विधिशास्त्र' विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल द्वारा संस्थापित 'भारतीय ज्ञान परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र' द्वारा **दिनांक 24 अगस्त 2024** को **'भारतीय ज्ञान परम्परा में विधिशास्त्र'** विषय पर **एकदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला** का आयोजन किया गया। कार्यशाला उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, मुख्य अतिथि अधिवक्ता श्री मुकेश गर्ग (वरिष्ठ विधिवेत्ता), तकनीकि सत्र में सत्र संचालक डॉ. अमित कुमार (सहायक आचार्य, विधि संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र), सत्राध्यक्ष प्रो. चांदकिरण सलूजा (निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली), चर्चा सत्र संचालक डॉ. आशुतोष दयाल माथुर (सेवानिवृत्त सह-आचार्य, सेन्ट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), समापन सत्र के मंच संचालक डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे (विभागाध्यक्ष, हिन्दू अध्ययन), विषय प्रस्तोता डॉ. अमित कुमार (सहायक प्राध्यापक, विधि संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) रहे। इस अवसर पर डॉ. मीनाक्षी (सहायक आचार्या, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), अधिवक्ता श्री राजेश गोरसी (जिला न्यायालय, कैथल), विश्वविद्यालय से डॉ. शीतांशु त्रिपाठी, डॉ. सत्येन्द्र गौतम, डॉ. शारदा, डॉ. प्रीति सैनी, डॉ. कुलदीप चन्द्र आदि ने चर्चा सत्र में परस्पर चर्चा करते हुए विविध विषयों को उपस्थापित किया।

डॉ. नवीन शर्मा (संयोजक, भारतीय ज्ञान परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र) ने कार्यशाला के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। ऑनलाइन माध्यम से जुड़े प्रो. चाँद किरण सलूजा (निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान) ने विधिशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर मार्गदर्शन किया, उन्होंने सर्वप्रथम मन से भारतीय ज्ञान को आत्मसात करने पर बल दिया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि ने कहा कि प्रशासन व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था और विशेष रूप से न्याय व्यवस्था भारतीय सन्दर्भों में भारतीय जनमानस की आकांक्षा और जरूरतों के अनुरूप होनी चाहिए। कार्यशाला के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने बताया कि भारतीय ज्ञान-परम्परा में विधिशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों पर चर्चा करके मॉड्यूल विकसित करने के उद्देश्य से यह कार्यशाला आयोजित की जा रही है। वर्तमान में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में न्याय व्यवस्था (विधिशास्त्र) का व्यापक स्तर पर एल.एल.बी. एवं एल.एल.एम. पाठ्यक्रमों का स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन एवं अध्यापन होता है। इसलिए नई शिक्षा नीति के तहत भारतीय ज्ञान-परम्परा के अनुसार इसके पाठ्यक्रमों का निर्माण किया जा रहा है। भारत में जो न्याय व्यवस्था है उसमें प्राचीन भारतीय विधिशास्त्र का भी समायोजन है। भारत के न्यायालयों ने भी कई सन्दर्भों में अपने निर्णयों में प्राचीन भारतीय शास्त्रों को प्रमाण माना है। प्रो. माथुर ने प्रतिपादित किया कि भारतीय धर्मशास्त्र व्यावहारिक न्याय व्यवस्था का दर्शन है उन्होंने पारिवारिक वाद-विवाद, पति-पत्नी के विवाद, सम्पत्ति विवाद, साक्षी एवं साक्ष्य सम्बन्धी नियमों पर चर्चा-परिचर्चा की। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ. अमित कुमार ने आधुनिक न्याय व्यवस्था की चुनौतियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने चर्चा में समलैंगिकता सम्बन्धी कानून को अमर्यादित बताया एवं कहा कि यह भारतीय ज्ञान-परम्परा का उपहास है। उन्होंने संस्कृत के विद्वानों से भारतीय दृष्टि से वर्तमान समस्याओं के समाधान देने का अनुरोध किया।

इस कार्यशाला में देशभर से आए हुए विधिशास्त्र एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के विद्वानों ने इससे सम्बन्धित व्यावहारिक विषयों पर विमर्श किया। साथ ही इसमें आधुनिक विधि विशेषज्ञों के साथ-साथ भारतीय धर्मशास्त्र, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मीमांसा एवं स्मृतिशास्त्रों पर भी चर्चा हुई।

नीति विमर्श

नीति विद्या परम्परागत भारतीय चिन्तकों के विशिष्ट ज्ञान का समन्वित स्वरुप है । नैतिकता ही जीवन है तथा अनैतिक जीवन निन्दनीय होता है । यह समस्त विद्याओं में श्रेष्ठ मानी जाती है । हमारे शास्त्रीय परम्परागत ग्रन्थों में नीतिशास्त्र की प्रशंसा के लिए बहुत से उदाहरण प्राप्त होते है । सभी के साथ नीतिपूर्वक आचरण नैतिक-जीवन का मूलाधार होता है, किन्तु नीति का बलपूर्वक आरोपण नही किया जा सकता है । नीति का सीधा सम्बन्ध न्याय से है अतएव न्यायानुमोदन ही नीति है। स्व का उत्कर्ष तथा पर का ह्रास नीति के अन्तर्गत आता है ।

बृहस्पति के अनुसार त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) प्राप्ति का मूल आधार नीतिशास्त्र ही है- 'नीतेः फलं धर्मार्थमावाप्तिः' (बार्हस्पत्य नीति सूत्राणि 2/27) नीति से रहित व्यक्ति पुत्र के समान शत्रु होता है- नीतिविमुक्तः पुत्र इव शत्रुः । (बार्हस्पत्य नीति सूत्राणि 2/30) यहाँ तक नीति रहित गुरु भी त्याज्य होता है । गुरुमपि नीति वियुक्तं निरासयेत् । (वही 2/52) पाणिनी व्याकरण के अनुसार नीति शब्द की व्युत्पत्ति प्रापण अर्थ में प्रयुक्त नी (णीञ् प्रापणे) धातु से (स्त्रियां क्तिन्) प्रत्यय के प्रयोग से की जाती है । इसका अर्थ होता है 'प्रापण' । प्रापण एक प्रेरणार्थक क्रिया है अर्थात् अनुचित मार्ग से किसी व्यक्ति को उचित मार्ग पर ले जाने की क्रिया नीति कहलाती है । नीतिवाक्यामृतम् में तन्त्र तथा अवाप को नीति शास्त्र कहा गया है- तन्त्रावापौ नीति शास्त्रम् । स्वमण्डपलायनामि भोगस्तन्त्रम् । परमण्डलावाप्यामि योगोऽवारः ।। (नीतिवाक्यामृत्तम् 30/45-47)

धर्मशास्त्रीय विविध ग्रन्थों में इसे पुरुषार्थ चतुष्ट्य का साधन माना गया है, नीतिशास्त्र से पृथक अन्य शास्त्रों में व्यवहारिक जगत के किसी एक पक्ष का ही वर्णन प्राप्त होता है, किन्तु नीति शास्त्र में सामाजिक सुरक्षा का बन्धन प्राप्त होता है-

क्रियैकदेशबोधीनिशास्त्रायन्यनि सन्ति हि ।
सर्वोप जीवकं लोकस्थितिकन्नीतिशास्त्रकम् धर्मार्थकाममूलं हि स्मृतं मोक्षपदं यतः।
अतः सदा नीतिशास्त्रस्य मगम्य सेद्यत्मतो नृपः ।
यद् विज्ञानान्नृपाद्याश्च शत्रु जिल्लोकरञ्जकः ।। (शुक्रनीति 1/4-6)

राजधर्म के अन्तर्गत राजा को हमेशा से ही नीतिज्ञ होना अत्यन्त अनिवार्य माना गया है क्योंकि उसके बिना उसका शक्तिशाली सैन्य बल भी विनष्ट हो जाता है, अतएव राजाओं के लिए नीति का ज्ञान अत्यावश्यक होता है । नीति का मूल्य विनम्रता से बोधित किया गया है-

तयस्य विनयो मूलं विनयः शास्त्रनिश्चयात् ।
विनयस्येन्द्रिजस्तद्युक्तः शास्त्रपृच्छति ।। (शुक्रनीति 1/92)

नीतिकल्पतरु में नीति मनुष्य के लिए दिव्यता प्राप्ति का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन माना गया-

नीतिर्नाम नरस्य चक्षुरुद्रितं दिव्यं यदाइलेषते ।
देवत्वं नितरं परं तु बलिनी मान्या परेहा बुधेः ।। (नीतिकल्पतरु 1/1)

जिस प्रकार से यथा समय प्रयत्न करने पर कुछ काल के उपरान्त कृषि फलीभूत हो जाती है उसी प्रकार से यह नीति कालान्तर में फल प्रदान करती है-

यथा काल कृतोद्योतोत्कृषिः फलवती भवेत् ।
तदवतनीतिरियं देवाचिरात्फलति न क्षणात् ।। (हितोपदेश-विग्रह-50)

सामाजिक विकास के अन्तर्गत आर्थिक विकास, कृषि, कर्म, न्याय एवं दण्ड व्यवस्था, व्यक्तित्व निर्माण तथा आदर्श नैतिक मूल्य, आदर्श आचार संहिता, लोकाचार, लोकनीति, लोकव्यवहार तथा लोकसिद्धान्त इत्यादि विषय समाहित है । इन सभी के अनुपालन से ही आदर्श समाज की स्थापना होती है । संस्कृत वाङ्मय में नीति साहित्य के अन्तर्गत राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों का व्यापक एवं विशद वर्णन उपलब्ध होता है । ये विषय आदर्श राष्ट्र के निर्माण हेतु अत्यन्त उपयोगी एवं लाभकारी हैं ।

डॉ. सत्येन्द्र कुमार गौतम
सहायक आचार्य- धर्मशास्त्र

आरम्भ सँवारा तो सँवरता है जीवन

जीवन का आरम्भिक समय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । जीवन का पतन और उत्थान बाल्यावस्था के संस्कारों पर ही निर्भर है । बाल्यावस्था एवं युवावस्था से ही जो व्यक्ति सद्गुणों का संग्राहक है, दयालु है, उदार है, कष्टसहिष्णु है, कर्तव्यपरायण तथा प्रेमी है, आगे चलकर वही समाज में एक अच्छा मानव हो सकता है । युवावस्था से ही जो नशीले पदार्थों का व्यसनी हो जाता है तथा जिसमें क्रोध, अभिमान, इन्द्रिय-लोलुपता की प्रधानता है एवं जो काम, क्रोध और रसना के स्वाद के वेग को नहीं रोक पाता, वही आगे चलकर समाज में मानवता को कलंकित करता है । सौभाग्यशाली युवक उसी को समझना चाहिए जो अपने जीवन में आरम्भ से ही सज्जन एवं साधु-महात्माओं के सुसंग से दैवी सम्पत्ति को बढ़ाता है और कुसंग से बचता है ।

अपने कर्तव्यकर्मों में सावधान रहना, प्रसन्न रहना, उन्हें विधि के साथ पूर्ण करने का दृढ संकल्प लेना – यह सब सफलता का शुभ मुहूर्त्त है । इसके विपरीत अपने कर्तव्य में आरम्भ से आलस्य करना, खिन्न-उदास रहकर बिना मन के कार्य आरम्भ करना – ये सफलता के पथ में अशुभ संकेत हैं, अपशकुन हैं । सभी का यह अनुभव है कि जिस दिन प्रातः उठने में आलस्य के वश देरी हो जाती है, उस दिन शौच, स्नान आदि नित्यकर्म समयानुसार नहीं होते, उस दिन सभी कार्यों में गड़बड़ी, अस्त-व्यस्तता रहती है और जिस दिन समय पर उठने में एवं नित्य नियम पूर्ण करने में आलस्य नहीं रहता, उस दिन सभी कार्य व्यवस्थित ढंग से पूरे होते हैं । वह दिन हँसता हुआ सा प्रतीत होता है ।

जिसका आरम्भ सुन्दर, धर्म, नीति और मर्यादा से सुसम्बद्ध होकर विधिवत् चलता है, उसका भविष्य भला क्यों न सुन्दर, पवित्र, सुखमय और मंगलमय होगा ? अवश्य होगा । जिन व्यक्तियों के हृदय में आरम्भ से केवल शरीर की सुन्दरता का तथा शरीर को सुन्दर बनाने के लिए वस्त्राभूषणों का और वस्त्राभूषणों के लिए धन का महत्त्व प्रतीत होता है, वे जीवन को सुन्दर नहीं बना पाते । ऐसे लोग वस्तुओं एवं व्यक्तियों की दासता में बंधे रहते हैं । यदि बाल्यावस्था एवं युवावस्था के आरम्भ में आलस्य, विलासिता, दुर्व्यसन अथवा भोग-कामनाओं को स्थान मिल जाता है, तब उस जीवन का मध्य और अन्त भी प्रायः अशुभ एवं असुन्दर ही सिद्ध होता है ।

विद्यार्थी का भविष्य प्रकाशपूर्ण होगा या अन्धकारपूर्ण, इसका परिचय आरम्भ की गतिविधियों से ही मिल जाता है । आरम्भ में साथ लगा हुआ थोड़ा-सा दोष, थोड़ा-सा कोई दुर्व्यसन, थोड़ी-सी चोरी की आदत, थोड़ा झूठ बोलने का स्वभाव, थोडी-सी कोई भी अनुचित कुचेष्टा आगे चलकर थोडी न रह जायेगी । वह उसी प्रकार अपना बड़ा आकार धारण करेगी, जिस प्रकार आरम्भ में थोडी सी अग्नि की चिनगारी ईंधन का संयोग पाकर भयानक रूप धारण करती है ।

यह समझने की बात है कि आरम्भ में जो कुछ थोड़ा दिखता है, वह आगे कभी थोड़ा नहीं रह जाता । वह चाहे थोड़ा-सा दोष हो या साथ चलने वाली कोई थोडी सी भूल हो अथवा कोई थोड़ा गुण हो या सुन्दर भाव अथवा सद्-विचार हो या दुर्विचार । बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि सावधान होकर जो कुछ भी अशुभ, असुन्दर, अपवित्र, अनावश्यक एवं अहितकर हो, उसे थोड़े से ही त्याग कर दे । जो थोड़े का त्याग नहीं कर सकता, वह अधिक का त्याग किस प्रकार करेगा । अतः अधिक होने पर जिसका त्याग अति कष्टकर है, उसका थोड़े से ही त्याग करना सुगम है । जो प्रत्येक कार्य के आरम्भ में आवश्यक एवं हितकर को स्वीकार करना और अहितकर का त्याग करना जानता है, उसी का जीवन आगे चलकर सुन्दर और पुण्यशाली होता है । वैसे तो बाल्यावस्था और युवावस्था का आरम्भ अपने संरक्षकों अर्थात् माता-पिता, भाई, गुरुजनों के अधिकार में रहता है, फिर भी कुछ सयाने बालक अथवा युवक आरम्भ से ही अच्छी बुद्धि से युक्त होते हैं जिन्हें स्वयं ही अशुभ, असुन्दर, अपवित्र बातों से घृणा होती है और शुभ, सुन्दर व पवित्र बातों में अनायास ही प्रीति होती है ।

माता-पिता, बड़े भ्राता तथा गुरु का कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तान का आरम्भ से ही किसी प्रकार की अशुद्ध, असुन्दर, अपवित्र बातों से संसर्ग न होने दें । बालकों के हृदय एवं मस्तिष्क में आरम्भ से विद्याध्ययन तथा बड़ों के प्रति शिष्टाचार, सदाचार, धर्म एवं ईश्वर का महत्त्व भरना चाहिए । आरम्भ को सुन्दर बनाना, कुसंग तथा कुसंस्कार से दूषित न होने देना, शुभ कर्मों में ही शक्ति का सदुपयोग करना, धर्मतत्त्व, ईश्वरतत्त्व को जानने की अभिलाषा को प्रबल बनाना, ये सौभाग्यवानों में ही देखे जाते हैं । मनुष्य की जीवनगति प्रकाश की ओर है या अन्धकार की ओर – इसका ज्ञान दूरदर्शी एवं बुद्धिमान को आरम्भ के दर्शन से ही हो जाता है । किसी प्रकार के आरम्भ को आलस्य और प्रमाद से बचाकर सुन्दर संग से विधिवत् सँभालना ही भविष्य को सुन्दर बनाना है । प्रातःकालीन नींद खुलते ही आरम्भ में ही उस परमात्मा का स्मरण कर लो, जिसकी सत्ता से तुम जी रहे हो और सब प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति का रस ले रहे हो । दिन में कार्य आरम्भ करने की विधि को, उसकी मर्यादित गति को और दिनभर के कार्यक्रम को समझ लो । स्मरण न रहे तो आरम्भ में ही सब कार्य लिख लो ।

किसी से मिलो तो आरम्भ में सरल भाव से, प्रसन्नचित्त से, गम्भीरतापूर्वक, सुन्दर शब्दों में बात करो । अधिक बनावटीपन न आने दो और भद्दापन भी मिश्रित न होने दो । किसी से प्रीति का सम्बन्ध जोड़ो तो आरम्भ में ही अपनी चाह, अपना स्वभाव या त्रुटि उसके सामने रख दो, उसे आरम्भ में ही तैयार कर लो कि वह तुमसे यदि प्रेम करता है तो तुम्हारी त्रुटियों के साथ, भूलों के साथ, दोषों के साथ किस प्रकार निर्वाह करना होगा । उसे धोखा न दो ताकि विश्वासघात न हो ।

जो कार्य आरम्भ करो, प्रारम्भ से ही उसकी पूर्ति के साधन जुटा लो, जो कुछ प्रतिकूलताएँ आ सकती हों, उनका सामना करने के लिए, अपने को सावधान करने के लिए जिन-जिन बातों की आवश्यकता पड़ती हो, उनको साथ लिये रहो । इससे साधन के सिद्ध होने में चूक नहीं होगी । यह तो हुई व्यवहार-जगत की बात, साधना-जगत में तो इससे भी अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है ।

डॉ. नवीन शर्मा
सहायक आचार्य- ज्योतिष

प्रश्नमञ्जरी

(१) नास्तिक दर्शन कहलाता है-
(क) वैशेषिक (ख) वेदान्त (ग) योग (घ) वैभाषिक
(२) संस्कृत काव्य का आदिकाव्य कहलाता है-
(क) रामायण (ख) महाभारत (ग) रघुवंश (घ) हरिवंश
(३) प्राचीन भारत का संविधान ग्रन्थ कहलाता है-
(क) वेद (ख) अर्थर्वेद (ग) मनुस्मृति (घ) उपनिषद
(४) नाट्य शास्त्र के अनुसार प्रथम वाद्य यन्त्र है-
(क) ढक्का (ख) मुरली (ग) मृदंग (घ) दुन्दुभी
(४) किस वेदाङ्ग को वेद का नेत्र कहा गया है ?
(क) निरुक्त (ख) शिक्षा (ग) व्याकरण (घ) ज्योतिष
(६) कोणार्क सूर्य मन्दिर का महात्म्य किस पुराण में है-
(क) विष्णुपुराण (ख) ब्रह्मपुराण (ग) शिवपुराण (घ) वायुपुराण
(७) मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। श्लोक किस कवि का है-
(क) कालिदास (ख) वेदव्यास (ग) वाल्मीकि (घ) श्रीहर्ष
(८) गरुड पुराण में श्लोकों की संख्या है-
(क) 51,000 (ख) 18,000 (ग) 35,356 (घ) 62,000
(९) 'स्वप्नवासवदत्तम्' में अङ्कों की संख्या है -
(क) 05 (ख) 13 (ग) 06 (घ) 09
(१०) मालविकाग्निमित्रम् नाटक में कालिदास ने किस नाटककार का स्मरण किया है-
(क) भास (ख) भारवि (ग) भवभूति (घ) भरत

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(विंशतितमे अंकस्य उत्तरम्)

(1) 40 (2) महाभारत (3) कर्मयोगशास्त्र (4) गीता (5) भरतमुनि
(6) यजुर्वेद (7) गान्धर्ववेद (8) 08 (9) अथर्वेद (10) वैभाषिक

सुभाषितानि

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ।।

यदि किसी के पास नैसर्गिक प्रज्ञा नहीं है तो शास्त्र उसकी क्या सहायता करेगा ? जैसे यदि कोई व्यक्ति नेत्रहीन हो तो दर्पण उसको वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण नहीं करा सकता।

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

जिन व्यक्तियों के पास विद्या (शिक्षा), तप, दान, ज्ञान, शील (सदाचार) गुण और धार्म इनमें से कुछ भी नहीं होता, वे मनुष्य पृथ्वी पर भार बने रहते हैं और मनुष्य के रूप में पशुओं की तरह इस संसार में व्यर्थ ही जीवन गंवाते है।

प्रत्यहं प्रत्वेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।
किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरुषैरिति ।।

मनुष्य को प्रतिदिन अपने आचरण की समीक्षा करनी चाहिए और विचार करना चाहिए कि मेरा आज कौन सा आचरण पशु के समान हुआ और कौन सा सज्जनों की तरह।